कुल पृष्ठ संख्या–24 (कवर पेज सहित) क्रम संख्या....

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures)

(In Words)

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ✓ अंग्रेजी

विषय हिन्दी

परीक्षा का दिन

दिनांक

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी (परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Roundoff)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर .... संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है। 161/2017

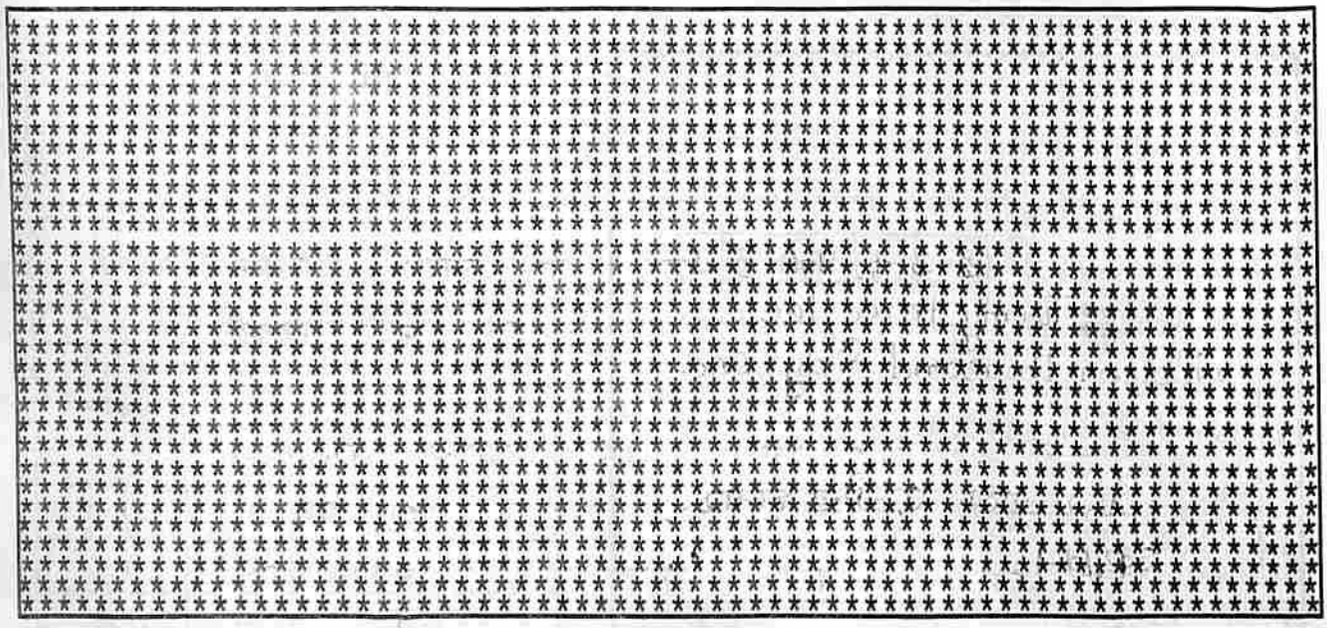

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशषां पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता हैं, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित हैं। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

द्वारा अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

1. उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक → 'कबीर'

2. कबीर का व्यक्तित्व इतना ऊँचा था कि उनके सामने टिक सकने की हिम्मत किसी में नहीं थी ।

3. कबीर ने धर्म की बुराइयों को निकाल-निकालकर सबके सामने रखा । कर्म, सेवा, अहिंसा तथा निर्गुण मार्ग का प्रसार किया । कर्म-काण्ड तथा मूर्तिपूजा का विरोध किया। कबीर ने सबके सामने एक विशाल ज्ञानमार्ग खोला । इस प्रकार कबीर ने समन्वयवादी दृष्टिकोण अपनाया और कथनी - करनी की एकता पर बल दिया । इस प्रकार वे एक महान समाज - सुधारक थे ।

4. भारतवासियों के प्रति कवि इसलिए आक्रोशित है क्योंकि वे अभी नींद में है। वे अपने धर्म का पालन नहीं कर रहे हैं। कवि उन्हें नींद से उठाना चाहता है।

5. पुण्य का क्षय एवं स्वार्थ का उदय तब होता है जब वीरता नहीं होती है। वीरता नहीं होने पर पुण्य का क्षय व स्वार्थ का उदय होता है।

6. धर्म का पालन तलवार के द्वारा किया जा सकता है। तलवार पुण्य की सखी है। जो वीर तलवार को हाथ में लेगा, वही धर्म का सच्चा पालक है। तलवार शत्रुओं को मारने का काम करती है, इसी से धर्म का पालन होता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

9. कर्म के आधार पर क्रिया दो प्रकार की होती है।
(i) सकर्मक क्रिया
(ii) अकर्मक क्रिया

सकर्मक क्रिया → ऐसा वाक्य जिसमें कर्म उपस्थित होता है अर्थात क्रिया का फल कर्म पर पड़ता है। सकर्मक क्रिया कहलाती है।

अकर्मक क्रिया, जिसमें क्रिया का फल कर्म पर न पड़कर कर्त्ता पर पड़ता है अर्थात जिसमें कर्म नहीं होता है. अकर्मक क्रिया कहलाती है।

2

BSEB-162/2017

10. "राधा ने मिठाई खाई।" वाक्य में
कारक → कर्त्ता कारक
काल → भूतकाल
वाच्य → कर्तृवाच्य

11. बहुव्रीहि समास → ऐसा समास जिसमें दोनों पदों का कोई महत्व नहीं हो, दोनों मिलकर किसी तीसरे अर्थ की ओर संकेत करते हो, बहुव्रीहि समास कहलाता है।

उदा० → दशानन → दश हैं आनन जिसके वह अर्थात रावण

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

12. (क) धोबी ने कपड़े अच्छे धोए ।

(ख) सुदामा कृष्ण के पक्के मित्र थे ।

13. (क) बालू से तेल निकालना → असम्भव कार्य करना ।

(ख) अंधे की लाठी होना → एकमात्र सहारा ।

14. 'चट मंगनी पट ब्याह' → किसी कार्य को शीघ्रता से करना ।

15. प्रसंग → प्रस्तुत पद्यांश हमारी हिन्दी की पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज' के पाठ्यक्रमांक '03' से लिया गया है। इस पाठ का नाम 'ऋतु वर्णन' है। व इस पाठ के कवि 'सेनापति' हैं।

व्याख्या → कवि सेनापति शीत ऋतु का वर्णन करते हुए कहते हैं कि शीत ऋतु अपने दल-बल के साथ आक्रमण कर रहा है। शीत ऋतु के प्रबल आक्रमण के कारण सूर्य भी चन्द्रमा के समान शीतल हो गया है अर्थात् सूर्य का ताप सहन करने योग्य हो गया है। आग भी निर्बल हो गयी है। बर्फीली हवाएँ ऐसी लग रही हैं, मानो पैने तीर बरस रहे हो ।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

गर्मी हवा शीत ऋतु से बचने के लिए भवन के कोनों में जाकर छिप गई है। लोग शीत ऋतु से बचने के लिए आग जलाकर बैठे हैं। उनकी आँखो से धुएँ के कारण आँसू आ रहे हैं। लोग उस आग पर गिर रहे हैं। लोग उस आग को निरन्तर सुलगाते हुए अपने हृदय से लगा रहे हैं। ऐसा लग रहा है मानो कि वे आग को शीत ऋतु से बचाने के लिए अपने हृदय के भीतर छिपाए रखना चाहते हैं। इस प्रकार कवि सेनापति कहते हैं कि जब शीत ऋतु अपने दल-बल के साथ आक्रमण करता है, तब उसके प्रभाव से सूर्य, आग, हवा आदि सभी निर्बल हो जाते है।

विशेष → प्रस्तुत पद्यांश में कवि सेनापति ने शीत ऋतु का ब्रज-भाषा में मनोरम वर्णन किया है।

16 प्रसंग → प्रस्तुत गद्यांश हमारी हिन्दी की पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज' के पाठ्यक्रमांक '15' से लिया गया है। इस पाठ का नाम 'ईर्ष्या तू न गई मेरे मन से' है। इस पाठ के लेखक 'रामधारी सिंह दिनकर' है।

व्याख्या → लेखक 'रामधारी सिंह दिनकर' ईर्ष्या से ग्रस्त मानव की विशेषता बताते हुए कहते हैं कि ईर्ष्यालु व्यक्ति उन वस्तुओं से आनन्द नहीं उठाता है जो उसके पास है, बल्कि वह यह सोचता है कि इससे अधिक वस्तु उसे क्यों प्राप्त नहीं हुई ? उदाहरण

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

देते हुए दिनकर जी कहते हैं कि कोई वस्तु जैसे एक उपवन को प्राप्त करके व्यक्ति ईश्वर को धन्यवाद देते हुए उसका आनन्द नहीं लेता, बल्कि वह यह सोचता है कि उसे इससे भी बड़ा उपवन क्यों नहीं प्राप्त हुआ? ईर्ष्या के कारण व्यक्ति के चरित्र का विनाश होता है। उसका चरित्र भयानक हो उठता है। वह दिन-रात इसी के बारे में सोचता है। अपना विकास नहीं करता है। वह इस संसार की प्रक्रिया को भूलकर विनाश में लग जाता है। वह स्वयं का विकास नहीं करता है। अपनी उन्नति के लिए वह प्रयास करना छोड़ देता है। वह दूसरों को हानि पहुँचाना ही अपना श्रेष्ठ कर्तव्य समझता है। इस प्रकार ईर्ष्याग्रस्त व्यक्ति के चरित्र का विकास रुक जाता है। वह अपना विकास नहीं करता है। वह दूसरों को गिराने में लग जाता है।

<u>विशेष</u>: प्रस्तुत गद्यांश में रामधारी सिंह दिनकर ने ईर्ष्यालु व्यक्ति के चरित्र के बारे में बताया है। हमें शिक्षा दी है कि ईर्ष्या से दूर रहना चाहिए।

17. कवि कृपाराम खिड़िया ने अपने सेवाभावी भक्त राजिया (राजाराम) को सम्बोधित करके इस सोरठे की रचना की है। इसमें कवि ने कहा है कि भविष्य में होने वाली परेशानियों से बचने के लिए वर्तमान में ही उपाय कर लेने चाहिए, क्योंकि जब ये बढ़ जाते हैं तो अत्यधिक कष्टदायक होते हैं।

BSER-1G2/2017

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

रोग, दावाग्नि व शत्रु को रोकने का उपाय पहले से ही कर लेना चाहिए। क्योंकि जब ये बढ़ जाते हैं तो अत्यधिक कष्टदायक होते हैं और तब इनका उपाय सम्भव नहीं होता है। जब कोई रोग होता है तो उसके लक्षण पहले से ही दिखाई दे जाते हैं यदि इस रोग का तब ही उपचार कर लिया जाए तो इससे कोई परेशानी नहीं होती है। लेकिन यह बढ़ने पर अत्यधिक पीड़ा देता है। दावाग्नि अर्थात् जंगल की आग यदि एक बार फैल गई तो इस पर नियंत्रण पाना मुश्किल हो जाता है, इसलिए इनका पहले से ही उपचार कर लेना चाहिए। यही स्थिति शत्रु की भी होती है। शत्रु किसी भी राज्य या व्यक्ति पर आक्रमण करके उसे कष्ट पहुँचाते हैं। यदि शत्रु का उपाय पहले से ही कर लिया जाए तो यह अधिक कष्टदायी नहीं होता है। इस प्रकार कवि कृपाराम खिड़िया उपर्युक्त सोरठे के माध्यम से हमसे कहते हैं कि भविष्य में घटित होने की आशंका वाली घटनाओं का उपाय पहले ही कर लेना चाहिए। यदि ये बढ़ गये तो अत्यधिक पीड़ादायक होते हैं। कवि कृपाराम खिड़िया के इस सोरठे का मुख्य भाव यह है कि शत्रु, दावाग्नि व रोग का उपचार पहले से ही कर लेना चाहिए। अन्यथा जीवन में कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

18. लोक संत पीपा ने निर्गुण भक्ति काव्यधारा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। संत पीपा कबीर की भाँति रामानन्द के शिष्य थे। ये आत्मा व परमात्मा दोनों को एक ही मानते थे। इनके ~~अनुसार~~ अनुसार जो ब्रह्माण्ड में है, वही परमात्मा इस शरीर में है। सच्ची भक्ति द्वारा ही उस परमात्मा से सम्पर्क स्थापित हो पाता है। यह पंचतत्व से निर्मित शरीर ही परमात्मा है। इस शरीर में जो आत्मा है, वही परमात्मा है। साधु-संतो का घर भी इस शरीर में ही है। पूजन-सामग्री भी इस शरीर में ही है। अतः यह पंचतत्व से निर्मित शरीर ही परमात्मा है। संत पीपा ने लोगों को सच्चे हृदय से ईश्वर की भक्ति करने को कहा। संत पीपा निर्गुण काव्यधारा को मानते थे। संत पीपा महान समाजसुधारक भी थे। संत पीपा मास-भक्षण के विरोधी थे। संत पीपा के समाज सुधारक होने के कारण निर्गुण भक्ति काव्यधारा का प्रचार-प्रसार करने में मदद मिली। संत पीपा का प्रखर व्यक्तित्व था। संत पीपा मूर्तिपूजा के विरोधी थे। ये निर्गुण-निराकार ईश्वर में विश्वास करते थे। कबीर की तरह इन्होंने भी खण्डन-मण्डन की शैली अपनाई तथा पवित्राचरण पर बल दिया। इन्होंने माना कि सभी लोग एक ही ईश्वर की संतान हैं। इन्होंने राजस्थान में निर्गुण भक्ति काव्यधारा को अपनाने पर बल दिया। लोकसंत पीपा के अनुसार आत्मा ही परमात्मा है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

19. गोपियाँ श्रीकृष्ण के रूप-सौन्दर्य के लालच से उनकी दासी बन गई। गोपियों की आँखें श्रीकृष्ण के रूप-सौन्दर्य में जाकर फँस गई थी। उनकी आँखे मधुमक्खी के समान हो गई थी। गोपियाँ श्रीकृष्ण के रूप-सौन्दर्य पर मुग्ध थी। गोपियाँ श्रीकृष्ण के रूप-सौन्दर्य को देखना चाहती थी। उनकी आँखे इसमें फँस गई थी। इस प्रकार गोपियाँ कृष्ण की दासी बन गई।

20. 'कल और आज' कविता में नागार्जुन ने ऋतु चक्र का सजीव वर्णन किया है। ग्रीष्म ऋतु में किसान क्रोधित थे तथा मेंढक धरती के अन्दर थे। गौरैया धूल में नहा रही थी। वर्षा ऋतु में धरती पर हरियाली आने से किसान प्रसन्न हो गए। मेंढक बाहर आ गये। मोर नाचने लगीं। इस कविता से कवि ने सन्देश दिया है कि जीवन में बुरे दिनों के बाद अच्छा दिन अवश्य आता है। इसलिए बुरे दिनों से निराश नहीं होना चाहिए।

21. 'कन्यादान' कविता में कवि ने नारी जीवन के प्रति संवेदना व्यक्त की है। वर्तमान में समाज द्वारा नारियों के लिए आदर्श रूपी प्रतिमान गढ़ दिये गये है। कवि चाहता है कि नारियाँ इनका विरोध करे। नारियों को आत्मसम्मान के साथ जीवन-यापन करना चाहिए। उन्हें पुरुषों की दासता को

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

स्वीकार नहीं करना चाहिए।

22. 'एक अद्भुत अपूर्व स्वप्न' निबंध व्यंग्य प्रधान भाषा शैली का है। लेखक ने पाठशाला, शिक्षकों व अंग्रेजी शिक्षा नीति के ऊपर अनेक व्यंग्य किए हैं। इसमें आवेगात्मक व व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग किया गया है। इसमें मुहावरों व लोकोक्तियों का प्रयोग किया गया है। इस प्रकार यह निबंध व्यंग्य प्रधान विनोद कोटि का है।

23. 'गौरा' की मृत्यु का कारण था कि ग्वाले ने उसे गुड़ में लपेटी हुई सुई खिला दी थी, जो उसके रक्त संचार के साथ हृदय तक पहुँच गई थी। दुधिये ने गौरा को सुई खिला दी थी। इसका कारण था कि पहले लोखिका दुधिया से अधिक दूध लेती थी। लेकिन गौरा के आ जाने से उसने दूध लेना बन्द कर दिया था। इसलिए दुधिया ने गौरा की असमय मृत्यु के लिए उसे सुई ~~खिला~~ खिला दी थी।

24. हामिद ने मेले में अनेक वस्तुएँ देखीं, लेकिन उसने चिमटा खरीदने का ही निर्णय लिया। क्योंकि उसने सोचा कि चिमटा देखकर उसकी दादी प्रसन्न होंगी और उसे हजारों दुआएँ देगी। उसकी दादी के हाथ रोटियाँ सेकते समय चिमटे के बिना जल

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

जाते थे। हामिद अपनी दादी से स्नेह करता था। इसलिए उसने चिमटा खरीदने का निर्णय किया।

25. सेनापति की उक्त पंक्तियों में वर्षा ऋतु का वर्णन है।

26. 'मातृवन्दना' कविता में कवि ने अपने श्रम का श्रेय 'भारत माता' को दिया है।

27. आध्यात्मिक दृष्टि से कन्याकुमारी का विशेष महत्व है क्योंकि कन्याकुमारी की आखिरी चट्टान पर स्वामी विवेकानंद ने समाधि लगाई थी। व यह भारत के दक्षिणी भाग में स्थित अन्तिम पवित्र स्थान है।

28. परनिन्दा के विषय में दादू ने कहा है कि परनिन्दा नहीं करनी चाहिए। जिसके हृदय में राम का निवास नहीं होता है वही परनिन्दा करता है। निन्दा व स्तुति को समान भाव से अपनाना चाहिए।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

7. (ख)

राजस्थान में गहराता जल संकट

प्रस्तावना : वर्तमान में उपलब्ध सभी संसाधनों का मानव विदोहन कर रहा है। वह जल, पेट्रोल, कोयला आदि का विदोहन कर रहा है। भारत में जल संकट अनेक राज्यों की समस्या बन गया है। इसमें राजस्थान में जल संकट गहरा रहा है। राजस्थान में जलाभाव के कारण राजस्थान के लोगों को जल संकट का सामना करना पड़ रहा है।

जल संकट के कारण : राजस्थान में जल संकट के अनेक कारण है। यहाँ वर्षा प्रचुर मात्रा में नहीं होती है। राजस्थान के पश्चिमी भाग में मरुस्थल फैला हुआ है। राजस्थान के पूर्वी जिलों में पर्याप्त जल होने के कारण लोग उसका विदोहन करते है। राजस्थान के लोग जल को बर्बाद करते है। राजस्थान की नदियों को उचित संरक्षण प्राप्त नहीं है। राजस्थान में परम्परागत व आधुनिक तकनीकों का अभाव है। वर्षा-जल का लोग पर्याप्त मात्रा में संग्रहण नहीं कर पाते है। अतः जल संकट की स्थिति देखने को मिलती है। राजस्थान में जल संकट ने एक विकराल रूप धारण कर लिया है। जल की कमी के आने के कारण लोगों को परेशानियाँ हो रही है। जल संकट राजस्थान के सभी नगरों व जिलों की एक प्रमुख समस्या बन गया है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(iii) जल संकट निराकरण के उपाय, जल संकट निराकरण के अनेक उपाय है। लोगों का जल का महत्व समझना होगा। वर्तमान में राजस्थान में राजस्थान सरकार के द्वारा मुख्यमंत्री जल स्वावलम्बन योजना प्रारम्भ की गई है। जिसके द्वारा राजस्थान में अनेक कुओं, बावडियों का निर्माण किया जाएगा। विभिन्न समाचार-पत्रों के माध्यम से लोगों को जागरूक किया जा सकता है। लोगों को बताना होगा 'जल ही जीवन है'। जल के अन्धाधुन्ध प्रयोग पर रोक लगानी होगी। आवश्यकतानुसार ही जल का प्रयोग लोगों द्वारा किया जाना चाहिए। लोगों को जल संकट के कारण उत्पन्न होने वाले दुष्प्रभावों को समझाना चाहिए। सभी जगह बैनरों व पोस्टरों के द्वारा जन-जागृति की जानी चाहिए। लोगों के लिए नवीन जल-तकनीकों का प्रशिक्षण प्रदान करना चाहिए। इस प्रकार के प्रयास यदि सरकार व लोगों द्वारा अपनाए जाएंगे तभी जल संकट की समस्या का समाधान होगा।

(iv) उपसंहार :- हमें जल की बचत करनी चाहिए। जल इस पृथ्वी पर सीमित है। जल की बचत सबसे अच्छा काम है। यदि जल की सुरक्षा होगी तो जीवन की भी सुरक्षा होगी क्योंकि 'जल ही जीवन है'।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

8. प्रेषक :
दीपक बुक स्टोर,
रतलाम, जयपुर।
पत्र क्रमांक : 162/ दी.बु.स./2018
दिनाँक : 17-03-2018
सेवा में,
श्रीमान विपणक प्रबन्धक जी महोदय,
पुस्तक महल,
नई दिल्ली।
विषय :— नवीनतम पुस्तक सूची भेजने हेतु।
महोदय जी,
उपर्युक्त विषयान्तर्गत निवेदन है कि विद्यालय शुरू हो चुके हैं। सभी छात्र - छात्राएँ पुस्तकों को खरीदना चाहते हैं। हमारे शहर में पुस्तकों की माँग अधिक है। वे पुस्तकों के बारे में जानना चाहते हैं। लेकिन उन्हें पर्याप्त जानकारी न मिलने से परेशानी उठानी पड़ रही है। अतः आपसे निवेदन है कि नवीनतम पुस्तक सूची भिजवाने की कृपा करें। जिसमें कक्षा X व कक्षा XII की पुस्तकें सम्मिलित है। आपकी अति कृपा होगी।
भवदीय,
दीपक (दीपक बुक स्टोर, रतलाम)

29. तुलसीदास → तुलसीदास का जन्म वि.सं. 1589 में उत्तरप्रदेश के बाँदा जिले के राजापुर में हुआ था। ~~इन~~ इनके पिता का नाम आत्माराम था। इनकी माता का नाम हुलसी था। वे

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

अभुक्त मूल नक्षत्र में पैदा हुए थे। अतः जन्म के समय ये पाँच वर्ष के बालक के समान थे। दाँत भी निकले हुए थे। इनके माता-पिता ने अपवश इन्हें मुनिया नामक दासी को दे दिया। इनकी पत्नी रत्नावली विदुषी थी। इनके गुरु का नाम नरहरिदास था। ये राम भक्त थे। इन्होंने अपनी रचनाओं में अवधी भाषा का प्रयोग किया है। इनकी मृत्यु 1680 वि.स. में हुई।

कृतियाँ →

1. जानकी मंगल
2. रामचरितमानस
3. बरवै रामायण
4. पार्वती मंगल

(ii) मुन्शी प्रेमचन्द → हिन्दी साहित्य में कलम के सिपाही के नाम से प्रसिद्ध मुंशी प्रेमचन्द का जन्म 1880 में वाराणसी के लमही ग्राम में हुआ था। साहित्य के क्षेत्र में इनके योगदान को देखकर 'शरतचंद्र चट्टोपाध्याय' ने इन्हें साहित्य सम्राट कहकर सम्बोधित किया है। इनका मूल नाम धनपतराय था। ये हिन्दी में नवाबराय के नाम से लेखन भी करते थे। इनका पहला कहानी संग्रह सोजे वतन था जो 1908 में प्रकाशित हुआ। सोजे वतन का तात्पर्य है - देश का दर्द। अंग्रेजी सरकार ने इस पर रोक लगा दी।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
		इनकी मृत्यु 1936 ई. में हुई।
		कृतियाँ
	1.	माधुरी
	2	हंस
	3.	मर्यादा
	4.	जागरण
	5.	संग्राम
	6.	मानसरोवर
	30 (i)	ओवरटेकिंग पर प्रतिबन्ध
	(ii)	यातायात प्रतिबन्ध समाप्त होता है।
	(iii)	आगे से दाँए मोड़ पर प्रतिबन्ध
	(iv)	एक ही रास्ता संकेत

→ समाप्त ←